v/;{k dh dye l

आज देश में लघु उद्यमी सबसे कठिन दौर से गुजर रहा है। वैसे तो लघु उद्यमी कई दशकों से विभिन्न समस्याओं से जूझता आ रहा है। इनमें से अनेक समस्यॉए सरकार द्वारा कुछ निर्णयों के कारण भी उत्पन्न हुई है। सर्वप्रथम इतने सारें अनियमों और नियमों का बोझ डाल दिया गया जिसे निभाना लघु उद्यमियों के लिए असम्भव था। इसके चलते लघु उद्यमी इन्सपैक्टरों द्वारा शोषित हुआ जो आज भी चालू है। इसके बाद वैश्वीकरण का दौर आया जिससे लघु उद्यमी रूपी छोटे से पहलवान को मल्टीनेश्लों और विदेशी माल विक्रेताओं रूपी विहंगम एवं सशक्त पहलवान के साथ लड़ने के लिए अखाड़े मे छोड़ दिया गया। इसके साथ–साथ जो प्राकृतिक समस्यॉए जैसे धनअभाव, विपणन, दक्ष मानव संसाधन की अनुप्लब्धता इत्यादी थी, उनका सामना आज भी लघु उद्यमियों को करना ही है। ऐसे में यदि लघु उद्योग बीमार हो जाता है तो उसके सही इलाज (रिहेबिलिटेशन)की व्यवस्था आज तक न तो केन्द्र सरकार और न ही राज्य सरकारें कर पाई है और जब लघु उद्योग बन्द(मृत) हो जाता है तब उसके निर्वाण(एक्जिट) का तो कोई रास्ता ही नही है, और उसका मालिक समाज में अपना मुॅह छुपाये फिरता है अथवा आत्माहत्या करने के लिए मजबूर हो जाता है। हमारे नेता एवं राजनैतिक पार्टियॉ और मीडिया किसानों की आत्महत्याओं और उनकी बदहाली की तो चर्चा करते है परन्तु लघु उद्योग और लघु उद्यमियों जिनका देश की अर्थव्यवस्था एवं समाजिक व्यवस्था में कृषि क्षेत्र से कम योगदान नही है उनकी दुर्दशा का किसी को भी ख्याल इस देश में नही है।

पिछले कुछ समय से देश के लघु उद्यमी सरकार द्वारा देश की आर्थिक स्थिति और भ्रष्टाचार को समाप्त करने के नाम पर चलाए गये अथवा चलाए जा रहे अभियान यथा डोमोनेटाईजेशन और जी0एस0टी0 से भी खासी परेशानी झेल रहे है अथवा झेलने वाले है एक बात तो मै दावे के साथ कह सकता हूॅ कि अभी भी भ्रष्टाचार रूपी दैत्य बहुत ही शक्तिशाली और अपनी गहरी जड़े जमाए हुए लघु उद्यमियों के सामने खड़ा है।

जी0एस0टी0 लागू करने का आई0आई0ए0 भी हिमायती रहा है और चाहता भी है कि यह लागू हो। लेकिन जिस रूप में और जिस तरह से इसे लागू किया जा रहा है उससे देश का लघु उद्यमी बहुत ही भयभीत है। जो कठिनाईयॉ उद्यमियों के समक्ष आ रही है उनका समाधान करने के लिए सरकारी मशीनरी तथा अवस्थापना सुविधॉए तैयार नही है। उदाहरणार्थ जी0एस0टी0 में माईग्रेट करने में ही पिछले कई महीनों से समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

मेरा देश एवं प्रदेश सरकारों से अनुरोध है कि यदि लघु उद्योगो को जिन्दा रखना है और उनकी सेहत अच्छी करनी है तो उनकी उपरोक्त समस्याओं का कारगार निदान अतिशीघ्र करना नितान्त आवश्यक है। अन्यथा और अधिक देर होने की स्थिति में लघु उद्योग सेक्टर की हालत बद से बदतर हो जाएगी जो देश की आर्थिक और समाजिक परिस्थितियों के लिए बहुत ही घातक होगी।